कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 04 जुलाई, 2025

प्राकृतिक खेती की ओर लौटता भारत

वीर सिंह
सहायक आचार्य, स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज और इंजीनियरिंग, आई.एफ. टी. एम. यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
E-mail: sveer635@gmail.com

भारत की कृषि परंपरा सदियों पुरानी है। यहां की मिट्टी, जलवायु और जैव विविधता ने सदैव किसानों को प्राकृतिक रूप से खेती करने की प्रेरणा दी है। हमारी पारंपरिक कृषि पद्धतियां प्रकृति के साथ समन्वय पर आधारित रही हैं, जहां बिना किसी रासायनिक साधनों के भी भरपूर उपज प्राप्त होती थी। परंतु हरित क्रांति के बाद कृषि में उत्पादन बढ़ाने की होड़ में अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग बढ़ा, जिससे खेती की लागत तो बढ़ी ही, साथ ही साथ मिट्टी की उर्वरता, जलस्रोत, जैव विविधता और मानव स्वास्थ्य पर भी नकारात्मकप्रभाव पड़ा।

आज जब पूरी दुनिया सतत विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ओर बढ़ रही है, तब भारत में भी अनेक किसान पुनः प्राकृतिक खेती की ओर लौट रहे हैं। इस परिवर्तन में कई प्रेरणास्रोत किसानों ने अहम भूमिका निभाई है, जो न केवल खुद इस पद्धति को अपना रहे हैं, बल्कि अन्य किसानों को भी इसके लिए प्रेरित कर रहे हैं। ऐसे ही एक किसान हैं, श्री ओम प्रकाश जी , ग्राम हमीरपुर, जिला बरेली (उत्तर प्रदेश)के निवासी हैं। उन्होंने न केवल प्राकृतिक खेती को अपनाया है, बल्कि अपने अनुभव और ज्ञान को साझा कर अनेक किसानों को इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

श्री ओम प्रकाश: परंपरागत से प्राकृतिक खेती की ओर एक प्रेरणादायक परिवर्तन

ग्राम हमीरपुर, जिला बरेली (उत्तर प्रदेश) के एक साधारण किसान श्री ओम प्रकाश आज हजारों किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुके हैं। उनके जीवन की यात्रा केवल एक किसान की नहीं, बल्कि एक सोच, एक आंदोलन और एक नई दिशा की कहानी है- वह दिशा जो खेती को फिर से प्रकृति के मूल स्वरूप में ले जाने का प्रयास है।

शुरुआत में, श्री ओम प्रकाश जी भी परंपरागत रूप से उसी खेती प्रणाली का हिस्सा थे जिसमें रासायनिक खाद, कीटनाशक और बाहरी इनपुट का अधिक उपयोग होता है। आधुनिक कृषि प्रणाली ने जहां प्रारंभिक वर्षों में उन्हें उत्पादन बढ़ाने में सहायता की, वहीं धीरे-धीरे उन्होंने महसूस किया कि इससे मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है, जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं और खेती की लागत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसके अलावा, स्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव दिखने लगा।

2018: एक निर्णायक मोड़– प्राकृतिक खेती की ओर

वर्ष 2018 श्री ओम प्रकाश जी के जीवन में एक क्रांतिकारी मोड़ लेकर आया। इसी वर्ष उन्होंने उत्तराखंड के रानीखेत में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और वहीं से उनके कृषि जीवन की दिशा बदल गई। उन्होंने परंपरागत रासायनिक खेती को त्यागकर प्रकृति के अनुरूप खेती का मार्ग चुना। यह केवल तकनीक का परिवर्तन नहीं था, बल्कि सोच, दृष्टिकोण और जीवनशैली का भी परिवर्तन था।

अब तक जिस खेत को वे केवल अन्न उत्पादन की एक ज़मीन मानते थे, अब उसे एक जीवंत इकाई, एक जैविक तंत्र और प्रकृति का हिस्सा मानने लगे। खेत अब सिर्फ पैदावार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि वह जीवंत मित्र बन गया जिसकी देखभाल, समझ और सह-अस्तित्व आवश्यक हो गया।

हालाँकि, यह परिवर्तन सरल नहीं था। प्राकृतिक खेती की शुरुआत में श्री ओम प्रकाश जी को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उपज में प्रारंभिक गिरावट आई, जिससे आर्थिक दबाव बढ़ा। आसपास के किसानों और समाज के लोगों ने उनके फैसले की आलोचना की,

लेकिन श्री ओम प्रकाश जी ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने अनुभव, धैर्य और आत्मविश्वास से रास्ता बनाया। आज वे न केवल सफल प्राकृतिक कृषक हैं, बल्कि अनेक किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत भी बन चुके हैं।

देशी गाय बनी आधारशिला

प्राकृतिक खेती की दिशा में उनकी सबसे बड़ी ताकत बनी देशी गाय। उन्होंने गाय के गोबर और गोमूत्र सेजीवामृत, घन जीवामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र, अग्नि अस्त्रजैसे जैविक उत्पाद स्वयं बनाना सीखा और अपने खेतों में प्रयोग करना शुरू किया। इन

तैयारियों ने न केवल मिट्टी को पुनर्जीवित किया, बल्कि फसलों की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई।

श्री ओम प्रकाश जी के खेत अब फिर से हरियाली से लहलहाने लगे। उत्पादन में न केवल स्थायित्व आया बल्कि फसलों की गुणवत्ता भी सुधरी। उनकी सब्ज़ियाँ और अनाज स्वाद, पोषण और शुद्धता में अनूठे हैं। उन्होंने सिद्ध किया कि खेती को रसायनों की नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और समझ की ज़रूरत है।

प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और समाज सुधारक

आज श्री ओम प्रकाश केवल एक किसान नहीं, बल्कि एक कृषि शिक्षक और प्राकृतिक खेती के सच्चे सिपाही हैं।15 प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किए है। जिला स्तर और ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर किसानों को प्राकृतिकतरीकों से खेती करने की प्रेरणा दे रहे हैं। उन्होंने अपने खेत को एक प्रशिक्षण केंद्र बना दिया है जहाँ वे सैकड़ों किसानों को नि:शुल्क प्रशिक्षण देते हैं। उनके आत्मीय व्यवहार और व्यवहारिक उदाहरणों ने कई किसानों को रासायनिक खेती छोड़ने को प्रेरित किया है।

प्राकृतिक खेती: लाभ केवल किसान तक सीमित नहीं

श्री ओम प्रकाश जी की सोच यह है कि प्राकृतिक खेती केवल किसान के लिए लाभकारी नहीं है, बल्कि यह मिट्टी, जल, पर्यावरण, उपभोक्ता और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी वरदान है। उनका मानना है कि यदि खेती को टिकाऊ और लाभकारी बनाना है, तो उसे प्रकृति के साथ सामंजस्य में करना होगा। यह केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है।

प्राकृतिक खेती के प्रमुख तत्व

प्राकृतिक खेती कोई एकल प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जिसमें किसान स्वयं जैविक संसाधनों का निर्माण करता है और उनका प्रयोग करता है। श्री ओम प्रकाश जी ने निम्नलिखित तत्वों को अपनी खेती में नियमित रूप से अपनाया:

प्राकृतिक खेती की प्रमुख सामग्रियाँ– सारणीबद्ध विवरण

क्रम	नाम	उपयोग/उद्देश्य	प्रमुख घटक	प्रयोग विधि	लाभ
1.	जीवामृत	मृदा में सूक्ष्मजीवों की वृद्धि व पोषण	गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन, मिट्टी, पानी	ड्रम में मिलाकर 5-7 दिन तक सड़ा कर, सिंचाई या छिड़काव द्वारा उपयोग	मृदा उर्वरता में वृद्धि, रोग प्रतिरोधकता में सुधार
2.	बीजामृत	बीजों को रोगमुक्त बनाना व अंकुरण दर बढ़ाना	गोमूत्र, गोबर, चूने का पानी, मिट्टी	बीजों को घोल में 30 मिनट भिगोकर छाया में सुखाकर बोवाई करें	अंकुरण दर में वृद्धि, रोग नियंत्रण
3.	दशपर्ण अर्क	जैविक कीटनाशक के रूप में कीटों को भगाने हेतु	10 प्रकार की पत्तियाँ, गोमूत्र, मिर्च, लहसुन, पानी	सभी सामग्री को 15 दिन सड़ाकर छानकर 1:10 अनुपात में छिड़काव	फसलों की सुरक्षा, पर्यावरण के अनुकूल
4.	अग्नि अस्त्र	तीव्र प्रभावी प्राकृतिक कीटनाशक	मिर्च, लहसुन, नीम पत्तियाँ, तंबाकू, गोमूत्र	10 दिन सड़ाकर 1:10 के अनुपात में छानकर छिड़काव करें	चूसक व छेदक कीटों से बचाव, बिना रासायनिक असर के
5.	नीमास्त्र	नीम आधारित प्राकृतिक कीटनाशक	नीम के बीज या पत्तियाँ, गोमूत्र, पानी	3-5 दिन सड़ाकर 1:5 अनुपात में पानी में मिलाकर छिड़काव करें	जैविक कीट नियंत्रण, मृदा व फसल पर हानिकारक प्रभाव नहीं
6.	धनजीवमृत	बुआई या पौध रोपण से पहले मिट्टी उर्वरक मिश्रण	गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन, मिट्टी	मिश्रण को मिट्टी में मिलाकर बिस्तर या खेत में प्रयोग	मिट्टी की उर्वरता व

प्रमुख फसलें और उत्पादन की सफलता

श्री ओम प्रकाश जी अपने खेतों में मुख्य रूप से गेहूं, सरसों और बरसीम जैसी रबी फसलें उगाते हैं। इन फसलों की विशेषता यह है, कि ये बिना किसी रासायनिक खाद के भी उच्च गुणवत्ता की होती हैं। उनका मानना है कि प्राकृतिक खेती से उत्पादित अन्न में स्वाद, पोषण और भंडारण क्षमता अधिक होती है।

उत्पादन की दृष्टि से, उनकी उपज आसपास के रासायनिक खेती करने वाले किसानों की तुलना में कभी कम नहीं रही। बल्कि जैविक बाजारों में उनकी उपज को बेहतर दाम मिलने से उनकी आय में वृद्धि हुई है।

प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान

श्री ओम प्रकाश जी ने केवल स्वयं तक प्राकृतिक खेती को सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एकआंदोलनका रूप देने का प्रयास किया। उन्होंने अपने गांव और आसपास के क्षेत्रों मेंकई प्रशिक्षण शिविर, फील्ड डेमो, किसानों की बैठकें और स्कूल-कॉलेज स्तर पर सेमिनारआयोजित किए। उनके अनुसार:

"प्राकृतिक खेती का ज्ञान तभी सार्थक है, जब वह औरों तक पहुँचे और सामूहिक परिवर्तन लाए।"

प्राकृतिक खेती के लाभ: ओम प्रकाश जी के अनुभव से

1. लागत में कमी: प्राकृतिक संसाधनों से खेती करने पर रासायनिक खाद, कीटनाशक और महंगे बीजों की जरूरत नहीं पड़ती, जिससे खेती की लागत 60-70% तक घट जाती है।

2. मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि: लगातार गोबर, जीवामृत और जैविक तत्वों के प्रयोग से मिट्टी की जैविक संरचना और सूक्ष्मजीवों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है।

3. जल संरक्षण: मल्चिंग और जैविक पदार्थों से मृदा की जल धारण क्षमता बढ़ती है, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम होती है।

4. बेहतर मूल्य: जैविक उत्पाद बाजार में प्रीमियम दाम पर बिकते हैं, जिससे किसानों को लाभ होता है।

5. पर्यावरणीय संतुलन: प्राकृतिक खेती से कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग खत्म होता है, जिससे भूमि, जल और वायु शुद्ध रहती है।

चुनौतियां और समाधान

प्राकृतिक खेती में प्रारंभिक वर्षों में निम्नलिखित चुनौतियाँ आईं:

- **परिणाम धीरे-धीरे दिखते हैं:** पहले वर्ष उपज में थोड़ी कमी हो सकती है, लेकिन तीसरे वर्ष से उपज और लाभ में स्पष्ट वृद्धि होती है।
- **जैविक उत्पाद के बाजार की कमी:** शुरुआत में बाजार खोजना मुश्किल था, लेकिन उन्होंने स्थानीय जैविक मंडियों से संपर्क कर हल निकाला।
- **समाज में मिथक:** लोगों को यह समझाना कि बिना खाद के फसलें कैसे होंगी, एक चुनौती थी, जिसे उन्होंने अपने परिणामों से झूठा साबित किया।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती केवल एक कृषि प्रणाली नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच संतुलन स्थापित करने वाला जीवनदर्शन है। श्री ओम प्रकाश जी का अनुभव यह सिद्ध करता है कि यदि किसान धैर्य, समर्पण और संवेदनशीलता के साथ खेती करे, तो वह रसायनों के बिना भी लाभकारी, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि कर सकता है। उन्होंने दिखाया कि प्राकृतिक खेती से न केवल मिट्टी की उर्वरता और फसल की गुणवत्ता बढ़ती है, बल्कि मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और किसान की आय में भी सुधार होता है। ऐसे किसान आज की खेती को नई दिशा देने वाले पथप्रदर्शक हैं। अब आवश्यकता है कि सरकार और समाज मिलकर इस पद्धति को बढ़ावा दें, ताकि भारत की कृषि प्रणाली अधिक सुरक्षित, सशक्त और समृद्ध बन सके, क्योंकि प्राकृतिक खेती कोई विकल्प नहीं, बल्कि समय की मांग है।

●●●